Gf – यीशु और मंदिर का कर मत्ती १७:२४-२७ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु और मंदिर का कर

मत्ती १७:२४-२७

खोदाई: मंदिर कर क्या था? इसका भुगतान किसे करना आवश्यक था? यीशु ने यह क्यों कहा कि वह कर से मुक्त है? वैसे भी मंदिर का कर अदा करके मसीहा पतरस को क्या सबक सिखा रहा था? ईसा मसीह शिष्यों को क्या सबक सिखाना चाहते थे?

चिंतन: एक विश्वासी के रूप में आप नई वाचा की किस स्वतंत्रता का सबसे अधिक आनंद लेते हैं? जब हम किसी को ठेस पहुँचाते हैं तो क्या दांव पर लगता है? आपके लिए विकृत और कुटिल पीढ़ी में निर्दोष और शुद्ध, दोषरहित ईश्वर की संतान बनने का क्या मतलब है? क्या ईसा मसीह ने ऐसा किया? यदि हां, तो कैसे? क्या हमें ऐसा करना चाहिए?

यीशु और उसके प्रेरित गलील सागर पर कफरनहूम में अपने गृह अड्डे पर लौट आए। यह वर्ष का वह समय था जब यहूदी मंदिर कर, जो धर्म परिवर्तन करने वालों सहित, उम्र के प्रत्येक पुरुष इस्राएली पर लागू था, देय था। यह औसत श्रमिक के एक या दो दिन के वेतन के बराबर था। यह घटना हमें इस घटना की सटीक तारीख को इंगित करने में सक्षम बनाती है, क्योंकि हर साल, अदार के पहले दिन (फसह से पहले का महीना), यरूशलेम से भेजे गए दूतों द्वारा आने वाले मंदिर कर के बारे में पूरे देश में उद्घोषणा की जाती थी। अदार के पंद्रहवें दिन मुद्रा परिवर्तकों ने विभिन्न सिक्कों को बदलने के लिए देश भर में स्टॉल खोले, जिन्हें घर में रहने वाले यहूदी निवासी या विदेश में बसने वाले लोग इज़राइल के प्राचीन धन में ला सकते थे।892 इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं थी कि आधा शेकेल मंदिर कर वसूलने वाले पतरस के पास आते थे क्योंकि कफरनहूम उसका गृहनगर था (मती १७:२४ए)।

मूल रूप से, यह जंगल में टैबरनेकल से जुड़ा आधा-शेकेल शुल्क था (निर्गमन Eu पर मेरी टिप्पणी देखें – तम्बू के लिए प्रायश्चित धन)। पहली शताब्दी तक, यह कर यरूशलेम में मंदिर की पुजारी सेवा के रखरखाव के लिए लागू किया गया था। जबकि पुरोहिताई को भुगतान से छूट दी गई थी, यह समुदाय के अन्य सभी लोगों पर निर्भर था। इसका भुगतान मार्च में फसह के पर्व पर किया जाना था। हालाँकि, जब चर्चा हुई तब तक यह बूथों के पर्व के बहुत करीब था, जिसका मतलब था कि येशुआ लगभग छह महीने के विलंबित मंदिर कर का भुगतान कर रहा था। मंदिर में योगदान महत्वपूर्ण धार्मिक चिंता का विषय था जैसा कि इस तथ्य से देखा जा सकता है कि तल्मूड की एक पूरी किताब इस मुद्दे (ट्रैक्टेट शेकालिम) से संबंधित है। नीचे दिए गए प्रश्न का यही कारण

Gf – यीशु और मंदिर का कर मत्ती १७:२४-२७ | 2

है।

क्योंकि यहूदी मंदिर कर का भुगतान फसह के समय तक किया जाना था, संग्रहकर्ताओं को एक या दो महीने पहले पूरे फिलिस्तीन में भेजा गया था। रोमन द्वारा नियुक्त चुंगी लेने वालों के बजाय, ऐसे कर संग्रहकर्ता थे, जो पतरस के पास आए और उससे पूछा, “क्या आपका रब्बी मंदिर का कर नहीं देता” (मत्तीयाहू १७:२४ सीजेबी)? यह प्रश्न पूछने से कई बातें सामने आती हैं। सबसे पहले, आधा शेकेल मंदिर कर वसूलने वालों को अभी तक यीशु या उसके प्रेरितों से यह प्राप्त नहीं हुआ था क्योंकि वे कई महीनों से क्षेत्र से बाहर थे। अब जब वे वापस आ गए हैं तो अपना कर्तव्य पूरा करने का समय आ गया है। कुछ लोग शायद भ्रमित भी हुए होंगे या मौखिक ब्यबस्था के बारे में उनकी शिक्षा पर संदेह भी किया होगा (देखें Ei – मौखिक ब्यबस्था)। लेकिन यीशु ने बहुत स्पष्ट रूप से कहा: यह मत सोचो कि मैं टोरा या भाबिसत्बकता को ख़त्म करने आया हूँ। मैं मिटाने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं (मती ५:१७ सीजेबी)। यह आज भी यहोवा की तलाश करने वाले यहूदियों के लिए उत्तर देने योग्य एक महत्वपूर्ण प्रश्न बना हुआ है। यह विशेष रूप से ईसा मसीह के सबसे करीबी शिष्यों में से एक से आ रहा है जो उनके साथ करीब तीन साल तक रहा था।

पतरस ने मंदिर कर के बारे में प्रश्न का आत्मविश्वास से उत्तर दिया: हाँ, वह करता है। जब केफा घर में आया, तो यीशु ने उसके लिए एक निजी पाठ रखा और सबसे पहले बोला। पतरस के मन में कुछ विचारों को स्पष्ट रूप से समझते हुए, येशुआ ने एक व्यापक सादृश्य बनाया और पूछा: आप क्या सोचते हैं, साइमन? उसने पूछा। पृथ्वी के राजा किससे कर और कर वसूलते हैं – अपनी संतान से या दूसरों से? “दूसरों से,” पतरस ने उत्तर दिया (मत्तीयाहू १७:२५-२६ए)। बातचीत का मुद्दा यह था कि रोमन नागरिक कर नहीं देते थे क्योंकि वे साम्राज्य का समर्थन करने के लिए विजित लोगों या अन्य लोगों से श्रद्धांजलि एकत्र करते थे।

मंदिर के स्वामी के रूप में, यीशु को मंदिर कर का भुगतान करने से छूट थी। और चूँकि विश्वासी उसके बच्चे हैं, इसलिए, उन्हें भी छूट है। इसलिए मसीह ने छह महीने पहले अपने मंदिर का कर नहीं चुकाया क्योंकि वह मंदिर का प्रभु था और आध्यात्मिक रूप से कहें तो, उसके अनुयायी राजा के बच्चे थे और उन्हें भी छूट थी। उसने उनसे यह भी नहीं कहा कि जाकर इसका भुगतान करो।

तब बच्चों को छूट मिल जाती है, यीशु ने उससे कहा। हालाँकि, आधा शेकेल कर का भुगतान न करने से, बाहरी यहूदी पर्यवेक्षक के लिए और भी अधिक भ्रम हो सकता है। इसलिए मसीहा ने पतरस को उनका भुगतान सबसे असामान्य तरीके से करने का निर्देश दिया: गलील सागर के पास जाओ और अपनी लाइन बाहर फेंक दो। मौखिक ब्यबस्था की अनदेखी करना एक बात थी, लेकिन मंदिर कर का संबंध टोरा में निर्गमन ३०:११-१६ से था। दो-द्राचमा मंदिर कर के संग्रहकर्ताओं ने येशुआ के मंदिर के प्रभु होने की अवधारणा को नहीं समझा, इस प्रकार उन्हें इसका भुगतान करने से छूट दी गई। परन्तु

Gf – यीशु और मंदिर का कर मत्ती १७:२४-२७ | 3

ताकि हम अपमान न करें (मती १७:२६बी-२७ए), मसीह ने एक चमत्कारिक भुगतान का प्रावधान किया।



उन्होंने पतरस से मछुआरे के रूप में अपनी नौकरी पर
वापस जाने के लिए कहा। उसने कहा: जो पहली मछली तुम पकड़ो, उसे ले लो; इसका मुँह खोलो और तुम्हें आधा शेकेल का सिक्का मिलेगा। इसे ले लो और उन्हें मेरा और तुम्हारा कर चुका दो (मत्ती १७:२७बी)। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि किसी अन्य समय यीशु ने किसी चमत्कार के माध्यम से कर राशि प्रदान की थी। हालाँकि, इस अवसर पर, चमत्कार ने इस बात को पुष्ट किया कि वह ईश्वर का पुत्र था और उसे कर का भुगतान करने से इनकार करने का पूर्ण अधिकार था, यदि उसने ऐसा चुना होता। हालाँकि, वह इसे पूरी तरह से अपनी दैवीय इच्छा से भुगतान करने के लिए सहमत हुए। इस तरह से अपना भुगतान करके, केफ़ा न केवल धार्मिक दायित्व को पूरा करेगा, बल्कि एक सार्वजनिक गवाही भी देगा कि येशुआ और उनके अनुयायी सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्यों में टोरा का पालन कर रहे थे। लेकिन इसके अलावा, बिल्कुल सही मछली पकड़ने का चमत्कारी तरीका पतरस और बारहों के लिए अपना विश्वास बनाए रखने का प्रमाण था।

यीशु शिष्यों को जो सबक सिखाना चाहता था वह यह था कि वे राजा के पुत्र थे, और वह मंदिर का स्वामी था।